नक़्शे की भूलभुलैयाँ

रंजना सिंह



इस वर्ष मेरे विद्यार्थी दूसरी कक्षा से उत्तीर्ण होकर तीसरी कक्षा में प्रवेश कर गए हैं। मैं इनके साथ तब से काम कर रही हूँ जब ये पहली कक्षा के सत्र के अन्त की ओर बढ़ रहे थे। दिल्ली के सरकारी विद्यालयों में पहली व दूसरी कक्षा तक एन. सी. ई. आर. टी. की गणित, अँग्रेज़ी तथा हिन्दी की पाठ्यपुस्तकें ही पढ़ाई जाती हैं और कक्षा तीन से 'आस-पास' यानी पर्यावरण अध्ययन की पुस्तक के साथ 'मेरी दिल्ली' जिसे सामान्यतः सामाजिक अध्ययन के रूप में सम्बोधित किया जाता है, पाठ्यक्रम का भाग बनती हैं। क्योंकि हम दिल्ली प्रदेश में रहते हैं इसलिए यह माना जा सकता है कि हमें हमारे प्रदेश के बारे में जानकारी होनी चाहिए इसलिए 'मेरी दिल्ली' जो कि एस. सी. ई. आर. टी. द्वारा निर्मित पुस्तक है, अपने आप में एक अहम भूमिका रखती है।

इस लेख द्वारा मेरा उद्देश्य इस पुस्तक की भूमिका को नकारने का नहीं है अपितु इसके सन्दर्भ व बच्चों के साथ इसकी अन्त:क्रिया को समझने का है। क्योंकि जब मैंने 'मेरी दिल्ली' का प्रथम पाठ खोला तो मैं हैरान रह गई यह देखकर कि पहला पाठ दिल्ली के मानचित्र से शुरू होता है। जहाँ मेरे विद्यार्थियों ने दूसरी कक्षा तक सिर्फ़ कुछ ज्यामितीय आकृतियाँ व उनके पैटर्न तक की ही समझ विकसित की थी वहाँ दिल्ली के इस मानचित्र का अचानक से आ जाना बड़ा ही असहज प्रतीत हुआ। इसलिए मैंने तीसरी कक्षा की ही दूसरे विषयों की पुस्तकें जैसे गणित, आस-पास के शुरुआती पाठ टटोलने और कुछ कड़ियाँ ढूँढ़ने की कोशिश की जिनके माध्यम से दिल्ली के मानचित्र तक बच्चों को लेकर जाया जा सके। क्योंकि अगर मैं बच्चों को सीधे मानचित्र से शुरू कराती तो मुझे डर था कि कक्षा के आधे से ज़्यादा बच्चे उसको समझ नहीं पाते और अधिगम प्रक्रिया से अपने आपको डर के कारण दूर कर लेते।

गणित की पाठ्यपुस्तक को खंगालने के बाद वह कड़ी मुझे नज़र आने लगी थी। गणित की पुस्तक का प्रथम पाठ 'देखें किधर से' (where to look from) वस्तुओं को अलग-अलग कोणों से देखकर उसकी तस्वीर बनाने पर आधारित है। यानी कि एक कार को उसके सामने, साइड से तथा ऊपर से देखने पर दिखने वाली अलग–अलग छवियाँ/आकृतियाँ। इसी संकल्पना को आधार बनाकर कक्षा में कई वस्तुओं जैसे - पानी की बोतल, किताब, डस्टर, खिलौना, कुर्सी आदि को अलग-अलग कोणों से देखकर (visualise) और बाद में बिना देखे परन्तु कल्पना (imagine) करके तस्वीर बनाने का अवसर बच्चों को दिया गया। इसके उपरान्त बच्चों के सामने यह प्रश्न रखा -

"अगर आपके पंख लग जाएँ और आप कक्षा के ठीक ऊपर हों तो आपको अपनी कक्षा कैसी नज़र आएगी?"

मैं इस प्रश्न को देने से पहले बहुत आत्मविश्वास महसूस नहीं कर रही थी। कहीं-न-कहीं एक शंका थी कि कहीं यह एक बड़ी छलाँग तो नहीं। मैं वस्तुओं के अलग-अलग कोणों से चित्र बनवाने से लेकर सीधे कक्षा का नक़्शा बनवाने के बीच, इसी प्रक्रिया में इन दोनों के बीच में होने वाली कोई छूटी हुई गतिविधि खोजने का प्रयास कर रही थी। परन्तु ऐसी कोई गतिविधि समझ नहीं आ रही थी। इसी असमंजसता को समझते हुए मैंने अपने लिए कुछ बिन्दु बनाए जैसे - कक्षा के नक़्शे के लिए पहले कक्षा की बाहरी आकृति (आयत) से शुरुआत करना। फिर जो मुख्य चीज़ें हैं जैसे- दरवाज़े, खिड़कियाँ, अलमारी, ब्लैकबोर्ड व उनके नक़्शे में स्थान (position/location) पर चर्चा करना और अन्त में छोटी-छोटी चीज़ें जैसे - बिजली का बोर्ड, कूड़ादान, बच्चों के बैठने की डैस्क तथा उस समय उन डैस्क पर बैठे बच्चे नक़्शे में चित्रित करना।

इसी शृंखला में मैंने यह गतिविधि कक्षा में कराई। बच्चों ने मेरी शंका के विपरीत बहुत जल्दी और आसानी से कक्षा की आकृति बतला दी जो कि आयत थी। हम स्तर-दर-स्तर बढ़ रहे थे। बच्चों के विचार (ideas) तथा चर्चा को साथ-ही-साथ ब्लैकबोर्ड पर समाहित किया जा रहा था। जिससे बच्चे नक़्शा व नक़्शे पर चित्रित वस्तुओं की स्थिति (location) को भली-भाँति समझ सकें। धीरे–धीरे कक्षा की सभी वस्तुओं को नक़्शे में इंगित किया गया। बच्चों को सबसे ज़्यादा मज़ा तब आया जब उन्हें एक-एक करके नक़्शे में इंगित किया गया। बाद में भी वे बार-बार बोर्ड पर जाकर मुझे व अपने साथियों को बता रहे थे कि वे इस नक़्शे में कहाँ हैं। अन्त में मैंने उनसे अपनी स्थिति (location) पूछी, जब मैं बोर्ड के पास खड़ी होकर नक़्शा बना रही थी जो उन्होंने भली-भाँति बता दी। इसके बाद बच्चों ने बोर्ड पर बना कक्षा का नक़्शा अपनी-अपनी कॉपियों में बनाया और अपने आप को उस नक़्शे में हाईलाइट किया।

आज का दिन मैंने यहीं पर समाप्त करना सही समझा क्योंकि बच्चों में कक्षा के नक़्शे को लेकर एक उत्साह एवं ख़ुशी पूर्ण

रूप से नज़र आ रही थी। साथ ही कक्षा के नक़्शे के साथ उनको एक दिन बिताने देने से उन्हें उपयुक्त समय मिलता कि वे नक़्शे व नक़्शा बनाने की पूरी प्रक्रिया को आत्मसात कर सकें।

अगले दिन हमने नक़्शे पर फिर से चर्चा की तो एक बच्चे ने पूछा कि मैम हमने कक्षा में लगे चार्ट पेपर तो नक़्शे में बनाए ही नहीं? कक्षा के अन्य बच्चे भी इस प्रश्न से सहमत नज़र आ रहे थे और शायद उनके लिए भी ये प्रश्न उतना ही प्रासंगिक था। अब बच्चे हर वो चीज़ या वस्तु नक़्शे में प्रदर्शित करना चाहते थे जो भी उनकी कक्षा में उपस्थित थी। यहाँ से मुझे लगा कि यह उचित समय है इस बात पर चर्चा करने का कि नक़्शे व तस्वीर में क्या अन्तर है तथा नक़्शे का उद्देश्य होता क्या है। वैसे मैंने पहले से इस बारे में बच्चों से बात करने की कोई पूर्वनियोजित योजना नहीं बनाई थी। शायद मैंने बच्चों की क्षमताओं को कम आँका, परन्तु मेरे लिए यह अति उल्लास का समय था कि बच्चे इस बारे में जानने के लिए तैयार लग रहे थे। इसलिए नक़्शे के उद्देश्य को मोटा-मोटा ऐसे स्पष्ट किया गया - "तस्वीर किसी जगह की सभी वस्तुओं को बिलकुल वैसे ही दिखाती है जैसी चीज़ें व्यवस्थित होती हैं बस आकार थोड़ा छोटा हो जाता है। इसमें हर एक छोटी-से-छोटी व बड़ी-से-बड़ी वस्तु दिखती है। नक़्शे में हम किसी जगह को दिखाते हैं तथा वहाँ की मुख्य locations, रास्ते व वस्तुओं को ही इंगित किया जाता है। अगर हम नक़्शे में हर एक वस्तु चित्रित करने लगे तो फिर नक़्शे व तस्वीर या चित्र में कोई अन्तर नहीं रह जाएगा।" इसके बाद भी मुझे लगा कि मेरा स्पष्टीकरण बच्चों तक पूर्ण रूप से नहीं पहुँचा है इसलिए मैंने उनसे पूछा, "अगर स्कूल के मुख्य द्वार से आपको अपनी कक्षा तक आने के लिए किसी को रास्ता बताना पड़े तो कैसे बताओगे?" इस पर एक बच्ची ने जवाब दिया, "उनको कहेंगे हॉल के बगल में जो सीढ़ी है उससे ऊपर चढ़ जाओ फिर एक क्लास छोड़ के आगे वाली क्लास हमारी है।" इसी को आधार बनाकर मैंने कहा कि क्या जब आपने रास्ता बताया तो रास्ते में आने वाली सारी वस्तुओं के बारे में बताने की ज़रूरत पड़ी जैसे- रास्ते में पड़ने वाले चार्ट आदि? इस पर बच्चों का जवाब था नहीं। बच्चे अब नक़्शे का अर्थ समझने लगे थे।

अब अगला क़दम था विद्यालय का नक़्शा जिसके लिए हमारी पूरी कक्षा के बच्चों ने विद्यालय का भ्रमण किया। हमने ग्राउण्ड फ्लोर की सभी कक्षाएँ, टॉयलेट, प्रयोगशाला आदि देखीं। मुख्य रूप से मैंने विद्यालय के पीछे की दीवार पर बच्चों का ध्यान आकर्षित किया क्योंकि हमारे विद्यालय की आकृति आयताकार न होकर एक चतुर्भुज की भाँति है जिसकी तीन साइड तो एकदम सीधी हैं परन्तु सबसे पीछे की दीवार टेढ़ी है एक trapezium की भाँति। भ्रमण करने के बाद हम कक्षा में आए और फिर चर्चा–विमर्श करते हुए, जिस प्रक्रिया के अनुसार कक्षा का नक़्शा बनाया था ठीक उसी प्रक्रिया के द्वारा विद्यालय का नक़्शा उकेरा गया। इस बार मुझे नक़्शा बनाते समय दूरी तथा दीवारों की लम्बाई के अनुपात को बरकरार रखने में थोड़ी समस्या आ रही थी, क्योंकि नक़्शा एक बड़ी जगह का था। मेरी पूरी कोशिश थी कि दीवारों की लम्बाई व कक्षाओं के आकार व उनके बीच की दूरी का सही अनुपात रखूँ परन्तु हर बार यह सम्भव नहीं हो पा रहा था, किन्तु फिर भी हमने अपने विद्यालय का नक़्शा बनाया। जिसे बाद में बच्चों ने अपनी कॉपियों में भी बनाया।

इसके बाद का कार्य था कि बच्चे अपने घर का नक़्शा गृहकार्य के रूप में बनाकर लाएँ। इसको ज़मीनी स्तर पर समझाने के लिए मैंने सैम्पल के तौर पर अपने घर के ग्राउण्ड फ्लोर तथा फर्स्ट फ्लोर का नक़्शा बनाकर समझाने की कोशिश की कि सामान को घर के नक़्शे में किस प्रकार इंगित करना है। अन्त में बच्चों को अपने घर का नक़्शा बनाकर लाने को कहा।

कक्षा के शत-प्रतिशत तो नहीं परन्तु काफी बच्चे अपने घर का नक़्शा बनाकर लाए। कुछ नक़्शे बेतरतीब-से नज़र आ रहे थे परन्तु जब बच्चों ने अपने-अपने नक़्शों के बारे में बताना आरम्भ किया तो बेतरतीब-से दिखने वाले नक़्शे एक सुन्दर व स्पष्ट रूप धारण करने लगे थे। इसके बाद 'मेरी दिल्ली' के पाठ एक में दिया गया दिल्ली का नक़्शा देखा गया। मुझे खुशी इस बात की थी कि बच्चे अब दिल्ली के नक़्शे को समझने का प्रयास कर पा रहे थे और उसके अर्थ को समझ पा रहे थे।

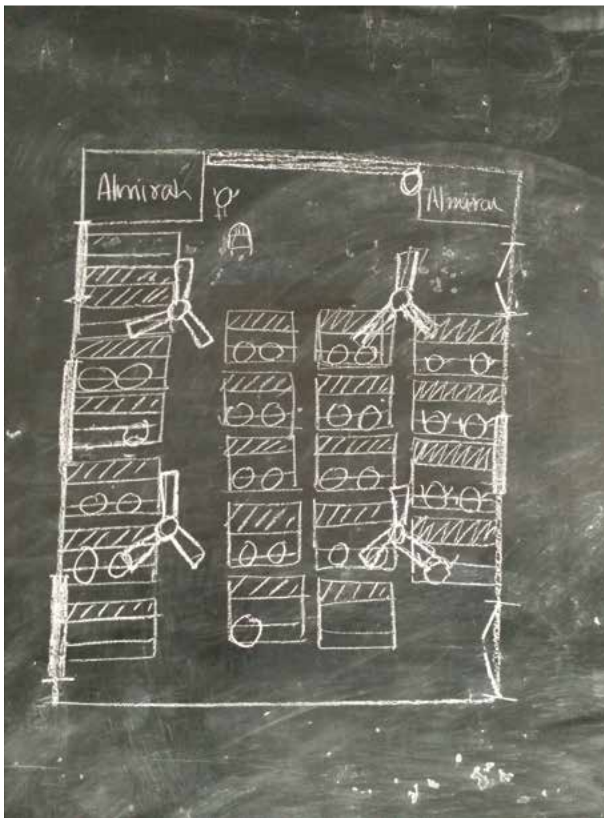
इस अनुभव के दौरान पैदा हुए कुछ प्रश्न अभी तक मेरे मस्तिष्क में कौंध रहे हैं। जैसे कि तीसरी कक्षा में 'मेरी दिल्ली' के प्रथम पाठ में ही दिल्ली का नक़्शा देना क्यों ज़रूरी था? क्या यह बच्चों की आयु तथा संज्ञानात्मक (cognitive) परिपक्वता पर खरा उतरता है या नहीं? जितना मैंने पढ़ा है व मेरा अनुभव है तीसरी कक्षा में प्रवेश करने वाला बच्चा 7-8 वर्ष का होता है, जो पियाजे द्वारा सुझाए गए विकास के स्तरों में concrete operational स्तर पर आता है। इस स्तर का बच्चा ठोस (tangible/concrete) वस्तुओं व अनुभवों से ज्ञान का निर्माण करता है। इस आयु वर्ग में दिल्ली का नक़्शा एक अमूर्त (abstract) चिन्तन व संज्ञान की माँग करता है जिसके लिए 7-8 वर्ष का बच्चा तैयार नहीं होता।

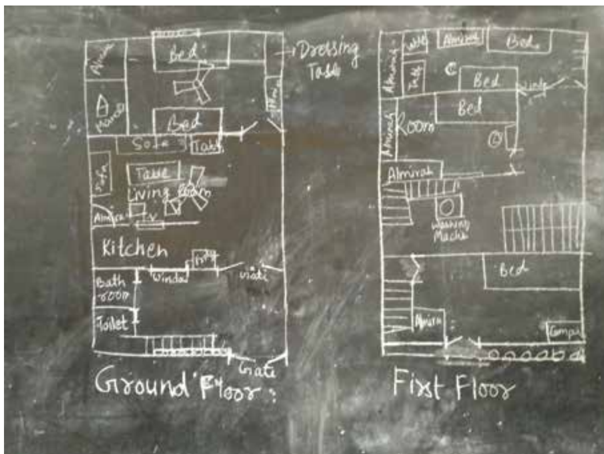
'मेरी दिल्ली' पाठ्यपुस्तक में दिल्ली के नक़्शे के अलावा और भी बहुत-सी समस्याएँ देखने को मिलीं, जैसे - भाषा की। हिन्दी व अँग्रेज़ी दोनों ही माध्यमों की पुस्तकों में बहुत ही जटिल व कठिन शब्दों एवं वाक्यों का प्रयोग किया गया है। उदाहरण स्वरूप पाठ 2 में "inhabitants of Delhi; knowledge of constructing the houses with concrete; till the nail stays, the dynasty will stand" जैसे phrases के

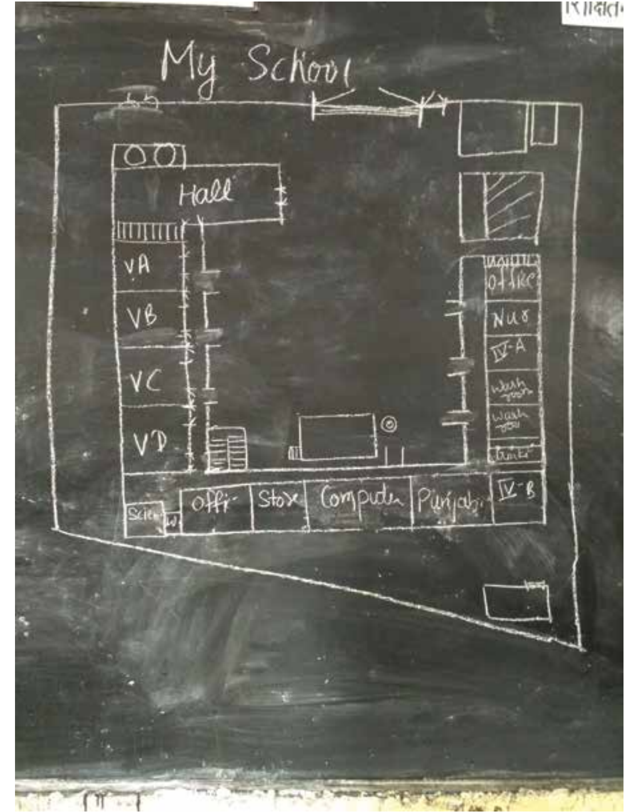
साथ प्राचीन तथ्यों (ancient facts) के नाम पर इतिहास के कई महान राजाओं व योद्धाओं के बारे में खूब सारी जानकारी चन्द पन्नों में बिना किसी सन्दर्भ के उड़ेली हुई है।

तीसरी कक्षा की अन्य एन. सी. ई. आर. टी. की पाठ्यपुस्तकों से तुलना करें तो एस. सी. ई. आर. टी. की 'मेरी दिल्ली' काफ़ी रूखी, कठिन व बच्चों को खोजबीन (explore) करने एवं सोचने के कम मौके प्रदान करती है। समूची पुस्तक में सभी पाठ एक ही पैटर्न पर लिखे गए हैं जिसमें पहले काफ़ी सारी लिखित जानकारी और उसके बाद उस जानकारी से सम्बन्धित प्रश्न दिए गए हैं। कुछ प्रश्नों को छोड़ दिया जाए तो अधिकतर प्रश्न लिखित जानकारी से ही उत्तर की हूबहू नकल की अपेक्षा रखते हैं। बच्चों के करने के लिए गतिविधियों की कमी नज़र आती है। ऐसे में बच्चों की पुस्तक के साथ अन्त:क्रिया बहुत सीमित रूप ले लेती है।

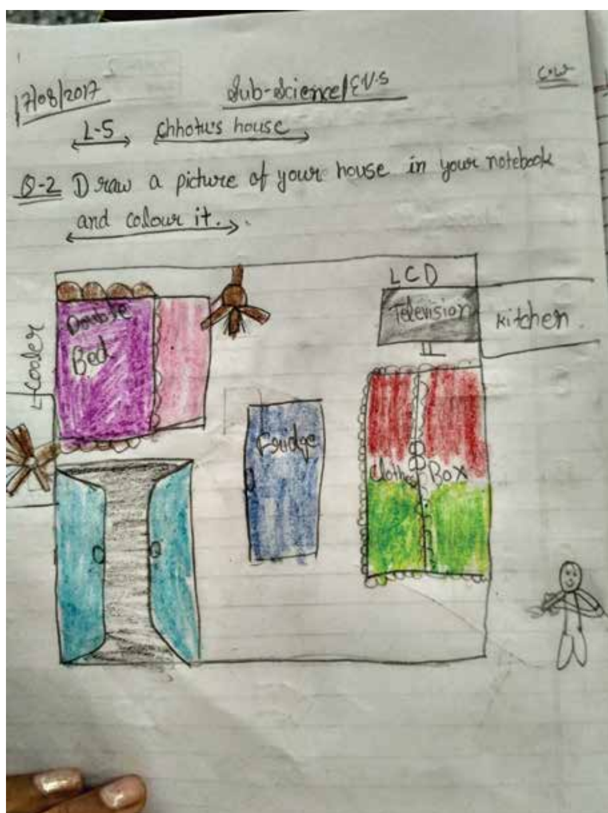
सोचने की बात यह है कि क्या हमारे पास संसाधनों के नाम पर



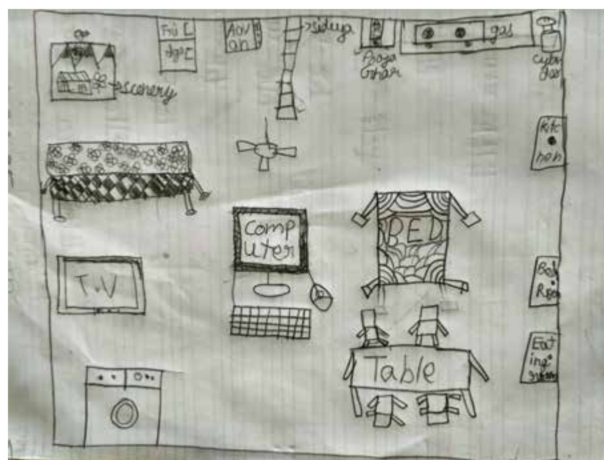




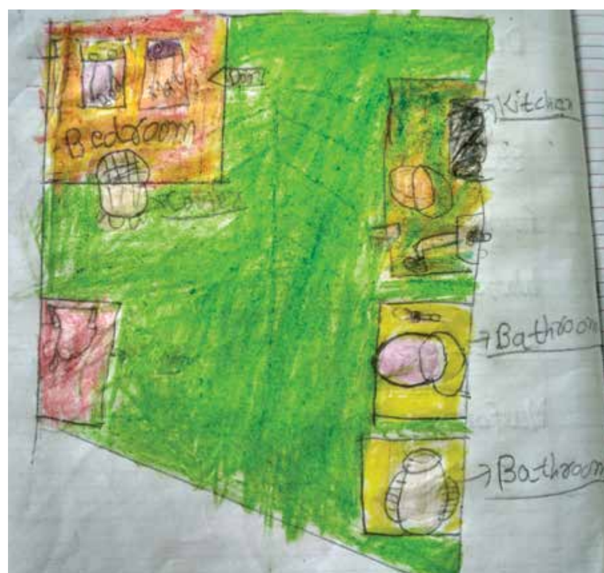












पाठ्यपुस्तकों के अलावा और कोई बेहतर विकल्प उपलब्ध हैं? क्योंकि एनसीएफ (2005) के अनुसार पाठ्यपुस्तक सिर्फ़ एक संसाधन है और अध्यापक स्वतंत्र है पाठ्यपुस्तक से बाहर के संसाधन प्रयोग करने के लिए। परन्तु यह पूरा मामला विकल्पों के उपलब्ध होने पर अटक जाता है विशेषकर सरकारी विद्यालयों में।

रंजना सिंह पिछले 9 वर्षों से प्रारम्भिक कक्षाओं में पढ़ा रही हैं। वे दिल्ली विश्वविद्यालय के शिक्षा संकाय से एम.फिल. कर रही हैं। कक्षा की गतिविधियाँ और प्रक्रियाएँ उन्हें शिक्षाशास्त्रीय मुद्दों पर लिखने के लिए प्रेरित करती हैं। उनसे ranjana852000@gmail.com पर सम्पर्क किया जा सकता है।